तो कभी कोई सतसंग या सभा या फलाना लग भी नहीं सकती है, होती भी नहीं है। ये भी समझते हैं। अच्छा, ये भी समझते हैं– हम लोगों ने(में) कोई भी रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान नहीं था। हम लोग त्रिकालदर्शी नहीं थे। ये भी तो सब समझते हैं; क्योंकि और कोई भी सतसंग हों, उनमें ये सब बातें होती ही नहीं हैं। वो तो रामायण और भागवत फलाना। यहाँ वो सब बातें बिल्कुल नहीं हैं एकदम। ये बच्चे समझते हैं कि जो शिवबाबा बैठ करके ब्रह्मा द्वारा सुनाते हैं, हम वही बातें सुनती हैं। वो बातें हैं ही बरोबर, रचता रचना के ही आदि,मध्य,अंत का ज्ञान देते हैं। ये भी अच्छी तरह से समझते हैं। या सब नई, कोई नए–2 आते हैं, कोई महीने का, कोई दो महीने का और कोई 8 रोज़ का भी ले आते हैं। तो बाप बैठ–2 कर फिर भी समझाते हैं उनको भी। तो ये आए हुए हैं भगवानुवाच। अभी इन बच्चों को ये तो मालूम है कि भगवान एक होता है, भगत अनेक हैं। इसलिए ऐसे नहीं कहेंगे भगवान एक, सो भक्तों में सर्वव्यापी यानी सभी भगवान ही भगवान हो जावें। तब तो फिर कोई भक्त, भक्त अपने को कहलाय न सके। भगवान हमको भक्त नहीं कहलाएँगे; क्योंकि ज्ञान का सागर है। तो बाप ही बैठकर बच्चों को समझाते हैं कि देखो, मैं कल्प–2 संगमयुगे, संगम, कल्प के संगमयुगे आता हूँ। भक्तों को फिर भी भगवान मिल क्या देगा? भगवान क्या देंगे? भगवान वर्सा देंगे। किस द्वारा देंगे, निराकार है? ज़रूर शरीर चाहिए। तो बरोबर साधारण प्रजापिता ब्रह्मा के शरीर में हैं। बच्चे जानते हैं। गोया हम शिव के पौत्रे हैं और ब्रह्मा के बच्चे हैं। शिव के पौत्रे हैं, सभी निराकार हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं, साकार हैं, बहन और भाई। ठीक है ना! अभी ये तो पक्का दिल में बैठा ना। ये नई बातें हैं ना। ऐसी कोई भी यहाँ, सारे भारत में ऐसी बातें कोई कर भी नहीं सकते, जान भी नहीं सकते हैं। ऐसे भी कोई बच्चे नहीं समझेंगे– हम कोई माँ–बाप के सामने बैठे हैं। उनसे हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं– ऐसे भी कोई भी सतसंग में होगा नहीं। मैं क्यों ये रिपीट करता हूँ? कि नए–2 आते हैं थोड़े, थोड़ा ज्ञान की पराकाष्ठा चाहिए बहुत और ये भी समझते हैं कि बरोबर हमको रोशनी मिली है। नहीं तो शिव कौन है, हम क्या जानें! शिव के मंदिर में तो जाते हैं। फिर उनका नाम तो बहुत ही– सोमनाथ कहो, रुद्र कहो, अथाह नाम हैं; परन्तु वो है, हमारा क्या लगता है, हम क्यों पूजते हैं, कोई पता नहीं। वो उनको क्यों पूजते हैं, क्या लगता है पता नहीं, ब्रह्मा,विष्णु,शंकर ये पूजते हैं उनको सूक्ष्मवतनवासी। क्या है इनका ऑक्युपेशन, कुछ भी नहीं जानते हैं। ऐसे ही अंधश्रद्धा से जा करके पूज करके आते हैं– जगदम्बा–जगतपिता। देखो, जगदम्बा है तो जगतपिता ज़रूर है। सो भी एडॉप्टेड। कोई ऐसे नहीं है कि कोई स्त्री–पुरुष हैं। नहीं, एडॉप्टेड हैं। प्रजापिता और जगतअम्बा। ये तो बहुत बच्चे हो गए, ढेर के ढेर। देखो, कितने बच्चे हैं और जानते हैं कि भक्तिमार्ग में जो गाते थे सो अभी प्रैक्टिकल में हम बैठे हैं सामने। भई, क्या बाप सुनाते हैं, समझाते हैं? समझाते हैं देखो अरे बात तो पहली एक कि तुम मेरे बच्चे बने, वर्से के हकदार बने। ठीक है! ये तो जानते हो कि परमपिता परमात्मा विश्व का रचने वाला, नई दुनिया का रचने वाला, सतयुग का रचने वाला। कोई कलियुग का रचने वाला तो नहीं होगा ना। नहीं। ऐसे नहीं समझना– ईश्वर सब कुछ रचता है। ना–2, ईश्वर नहीं रचता है। ईश्वर रचता ही है स्वर्ग, सतयुग; क्योंकि ईश्वर के नाम पर सब कह देते हैं– वो सुख भी देते हैं, दुःख भी देते हैं, फलाना करते हैं, टीरा करते हैं और है भी पत्थर–2 में, ठिक्कर–2 में। तो मुँझाय करके गुड़गुधानी कर दी है। बाप आ करके अच्छी तरह से समझाते हैं बच्चों को। किस द्वारा? भई, ब्रह्मा द्वारा। अच्छा, अभी भी समझा रहे हैं कि बच्चे, ये तो समझते हो बरोबर कि शिव तुम्हारा बाप है। अच्छा, वो तो निराकार है सबका। ऐ बाबा, शिवबाबा–3, ये कौन कहते हैं– शिवबाबा? आत्मा कहते हैं– शिवबाबा–शिवबाबा। अच्छा, ये शिवबाबा, अभी बाबा–2 कहते हैं जबकि पहचान होती है; परन्तु उस आत्मा को मालूम

मेरा शरीर वो तो विकारी बाबा का पैदाइश किया हुआ है, साकार का। अभी हम उनको याद करते; क्योंकि उसने तो हमको खड्डे में डाल दिया, विकार में डाल दिया। ठीक है ना बच्चे! ये रसम–रिवाज़ कलहयुग की या पतितों की, जो झट पतित (...)। अरे, ये तो बाबा हमको अभी पावन बनाते हैं। पावन बनाकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। वो हमको नरक का मालिक बनाते हैं। जो–2 द्वापर से ले करके बाप लिया वो हमको नरक में ढकेलते ले गए हैं। ये वर्सा (...), ठीक है ना बच्चे; क्योंकि श्रीमत पर नहीं थे, आसुरी मत पर। जो कुछ मत मिलती थी, मत तो ज़रूर बाप–माँ द्वारा मिलेगी, वो सभी नरक में गिराने के लिए। अच्छा, फिर गुरु–गोसाई मिलते थे, वो भी ऐसे ही आसुरी मत पर। उसको कहा जाता है आसुरी मत, ये श्रीमत। फर्क है ना बच्ची। बच्चे समझ गए कि आसुरी मत पर जबसे शुरू हुआ, चट उतरती कला चलती आई, चलती आई नीचे। समझा ना! सब उल्टी मत देते थे। ये आसुरी मत हैं। अभी फिर मिलती है सुल्टी मत, चढ़ती कला, ये चढ़ता ही चला जाता है। रावण द्वारा आसुरी मत और बाप भी आ करके (...) ये देखो हैं आसुरी सम्प्रदाय, ये देखो हैं अभी ईश्वरीय सम्प्रदाय। ये कहते हैं ना बच्चे– हम पहले बरोबर आसुरी सम्प्रदाय थे। अब ईश्वरीय सम्प्रदाय बने हैं। ईश्वर से वर्सा मिलता है स्वर्ग का। ...खुद स्वयं बैठ करके ये रचना का राज़ भी समझाते हैं और डायरैक्शन देते हैं कि ऐसा कोई भी काम न करना मेरे पूछे बिगर, किसको भी (...); क्योंकि जभी आसुरी राज्य है तो जो कुछ भी दान–पुण्य वगैरह करते हो, उनसे पाप बनता है। थोड़ा पुण्य बनता है, बाकी पाप बनते हैं; क्योंकि जिसको भी देते हो वो विकार में ही जाते हैं, पाप ही करेंगे; क्योंकि रावण आसुरी मत पाप ही कराते हैं। किसको भी तुम पैसा देंगे, पाप करेंगे। गुरु को पैसा देंगे, वो पाप करेंगे। क्या कहेंगे? तुमको बोलेंगे– ईश्वर सर्वव्यापी। बड़ा पाप करते हैं। तुमको बेमुख कर–करके नीचे गिराय दिया। समझा ना! जो कुछ भी करते आते हो, अच्छा चलो तुम कन्या दान करते हो, चलो ये भी तुम पाप करते; क्योंकि वो देते हैं दान उनको कंस को, वो उनको विकारी करते...। जो कुछ भी आसुरी मत पर करते आए हो, बाप बैठकर समझाते हैं– ये सभी आसुरी मत, जिससे तुम अभी देखो कितने (...), ये भारत श्रीमत पर क्या बनते हैं, आसुरी मत (...) क्या बन जाते हैं। तो तभी कहते हैं– ये जो तुम्हारे गुरु–गोसाई, शास्त्र–वेद वगैरह जो, मित्र–संबंधी, इन सबको अभी छोड़ो। इन्होंने ही तुमको ये...आसुरी मत पर गिराया है। अभी तुम जानते हो श्रीमत पर– उफ! हम तो बिल्कुल ही बाप को जान गए; परन्तु सबको जान गए। सबकी बायोग्राफी, सारे ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को जान गए हैं। ये बड़ी रोशनी मिल गई। देखो, कितने अंधियारे में थे! घोर–अंधियारे में। तो ये गाया हुआ है बरोबर– ज्ञान अंजन सत्गुरु दिया, अज्ञान अंधेर विनाश। अभी अंधियारे में थे। अभी तुम जानते हो, हम तो बहुत ज्ञानवान बन गए ना, जैसे बाबा एकदम, हम सब कुछ जानते हैं अच्छी तरह से। धर्म कैसे स्थापन होते हैं, कैसे वो पुनर्जन्म लेते हैं, कैसे ये सतोप्रधान, सतो,रजो,तमो में, तहाँ कि सभी ये पार्ट पूरे करके अभी आ करके तमोगुणी बने हैं, पतित बने हैं। सब रड़ियाँ मारते रहते हैं, साधु–संत–महात्मा– हे पतित–पावन, आओ! बाबा ने समझाय दिया ना; क्योंकि यहाँ गुरुओं का बहुत मान है। तो उनको बताते हैं– देखो, गुरु तुमको क्या करते हैं! कैसे सद्गति देते हैं! बोलते हैं– ये जो है गंगा, वो है सद्गति लिए। ये गंगा में स्नान करने से मुक्ति मिलती है, ऐसे कहते हैं ना। पावन होते हैं। अभी उल्टा बताया ना। बस, उन्हीं में लग गए हैं बिल्कुल ही। बस, खुद भी स्नान करते रहते हैं, तुम भी करते। फायदा तो कोई भी नहीं है; क्योंकि गंगा थोड़े ही पतित–पावनी है। गाते हो– हे पतित–पावन आओ। तो तुम्हारी बुद्धि ऊपर जाती है या नीचे जाती है– हे पतित–पावनी गंगा, पावन करो? तो बाप बैठकर ये समझाते हैं ना। नहीं तो कोई आगे तो ये नहीं समझते थे। आगे तो जो करते थे, चलो लगाओ गोता पानी में, समझा ना। दो दान। दान उनको देते हैं जो कहते हैं– गीता से तुम पतित–पावन बन जाएँगे। तो उल्टा दिया ना। तो पैसा भी

गया और हमको .....। तो बाप बोलते हैं–ऐसे फिर काम नहीं करने हैं तुम बच्चों को। मत पर चलना है। जो भी करना है, शादी करनी है, मुरादी करनी है, पार्टी में जाना है और कहाँ भी जाना है, तो फिर तुमको, उनको क्या–2 परहेज रखनी हैं, उससे समझदार करो। समझा ना! सबसे बड़े ते बड़ा पाप तो है वो काम महाशत्रु। जो ही बच्चों के लिए बड़ी मुसीबत होती है, जो पवित्र रहने की। देखो, न खुद रह सकते हैं। फिर बिचारी बच्चियाँ रहती हैं, उनको भी रहने नहीं देवे। बच्चे भी अगर कहें कि नहीं, हम शादी नहीं करेंगे तो मार पड़ती है बाप की और उनकी बिरादरी, सब दुश्मन बन जाते हैं। और बरोबर तुम्हारा दुश्मन ज़रूर बनेगा। क्यों? तुम ही हैं जो सबको खतम कराकर तुम अपना राज्य स्थापन कर(...), तुम्हारे सभी दुश्मन क्यों नहीं होने चाहिए! तुम कहती हो सबको– हमारे इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से ज्वाला निकलेगी। ये सब जो भी हैं ना, भस्म हो जाएगा। तो तुमने यज्ञ रचा ही है ये सृष्टि को विनाश करने के लिए, पुरानी सृष्टि को नई स्थापन करने के लिए और उसी समय में वो यज्ञ रचते हैं। नहीं, ऐसा नहीं वो शांति हो जावे। 'शांति–2' के लिए ये यज्ञ रचते हैं। लड़ाई न लगे, यज्ञ रचते हैं। अभी तुम अंदर में ताली बजाते हो, जल्दी लड़ाई लगे तो हम अपने वतन में जावें और वो कहते हैं– नहीं, शांति हो जावे, आपस में मिल जावें। अब मिलना तो है नहीं; क्योंकि यहाँ चल रहा है श्रीमत का प्लैन, वही गीता वाला प्लैन, एपिसोड; परन्तु उनमें तो भूल है– कृष्ण भगवानुवाच। मनुष्य को तो भगवान कह भी नहीं सकते हैं। तो पहले–2 जो भूल है एक, जो बाप हमेशा कहते रहते हैं– ये जो सर्वव्यापी कहते हैं ना, ये बड़ी ग्लानि है और वही बाप जो भारत में आते हैं और भारत को स्वर्ग बनाने आते हैं, उनके ऊपर बहुत ये गालियाँ, तब बाप आ करके डोरापा देते हैं– तुम देखो हमको कितनी ग्लानि करते आए हो। मैं जो तुम्हारा बाप हूँ, स्वर्ग रचता हूँ, उसकी ग्लानि। फिर देखो, देवताओं की ग्लानि– अपने कृष्ण को रानियाँ थीं, फलानी की ये थी, वो ब्रह्मा सरस्वती के ऊपर, शंकर पार्वती के ऊपर। ये क्या बकते रहते हो! देखो, कितना मूर्ख बन गए हो। ये किसके मत पर मूर्ख बने? ये रावण की मत पर, आसुरी मत पर। अभी इन मत पर मत चलो। जो–2 श्रीमत पर चलेंगे सो श्रेष्ठ बनेंगे। अभी सारी दुनिया तो नहीं ना, जब कहते हैं– कोटों में कोउ, कोउ में कोउ, कोउ में कोउ। ऐसे कहते हैं ना। फिर कहते हैं, देखो कितने निश्चय से बैठे हो। पूछते हैं– अरे भई, बरोबर तुम अपने मात–पिता के आगे, जिसको पुकारते थे, जिनसे अभी वर्सा लेते, उनके सामने बैठे हो? निश्चय है? पक्का लिखकर कहते हो? लिख देते हैं। फिर युद्ध का तो मैदान है। वो माया ऐसे–2 करती रहती है। बस, कोई के संग में आया और झट कोई गिराने कारण– मैं ये किया, ये किया, संशय बुद्धि हो गया। फिर वो भी तो बाप कहते हैं, होता है ना बच्ची, कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। आश्चर्यवत् बाप का बनन्ति, अपना स्टेटस ऊपर की पश्यन्ति, समझन्ति और औरों को समझावन्ति। ओ माया,...भागन्ति। जो आगे समझाते थे बहुत अच्छी तरह से, अभी उनके पास क्या जाकर करेंगे! गिला करेंगे? कर भी नहीं सकते हैं। छोड़ देते हैं। कोई के पास कुछ कहें, बोलेगा– तुम तो हमको नॉलेज देते, मैं तुम्हारे से तो वर्सा ले लिया है बाप से। हम चल रहा है, तुम क्यों गिर पड़ी हो? अरे, मैं चढ़ गया, तुम क्यों गिरी? ऐसे बहुत होते हैं, देखो। अच्छे–2 बहुत, जो सबको देते थे, वो बेमुख हो गए और जिनको देते थे, वो बोलते हैं– अरे, ये क्या हुआ, हम चढ़ गए, हम बाप का (...) और तुम बोलते हो कि अरे! हमको अच्छा नहीं लगता है, हम रह नहीं सकते हैं। बात भी नहीं करते हैं एकदम। देखो, वण्डरफुल है ना ये नॉलेज। अभी ऐसी बातें तो कोई और सतसंग में होती नहीं हैं। चलो जाते हैं एक सद्गुरु के पास, सुना। कहाँ सुना– महात्मा आए, चलो वहाँ। कहाँ सुना– और कोई आए हैं, चलो कहाँ–कहाँ। अभी तुम तो इतना धक्का नहीं खाओ ना। तुमको जब मिला प्रियतम परमपिता परमात्मा। बस, उनसे तो तुमको वर्सा मिलता है, बाकी तुमको क्या चाहिए! आए हो, जानते हो बरोबर कि यहाँ आते हैं हम बाप से ये अविनाशी ज्ञान रतन धन लेने और हैल्थ। सो बाबा ने डायरैक्शन

दे दिया– सो याद करते रहो। यहाँ आते हो रिफ्रेश होने। किससे रिफ्रेश होते हो? इस ज्ञान से। कुछ–न–कुछ, अच्छा, याद में भी बिठाते हैं, ठीक, फिर तुम बच्चों को जा करके बादल बन करके बरसना पड़े। अगर बादल न बरसे तो वो तो इतना धरती को तो पानी दे नहीं सकेंगे, पैदाइश हो भी नहीं सके। तुम तो ज्ञान के बादल, तो बरसना ज़रूर चाहिए। कैसे बरसना चाहिए? जैसे बाबा बरसता था, जैसे यहाँ बच्चियाँ बरसतीं, जैसे मम्मा बरसती थी। चलो, अच्छा, मम्मा को क्यों (...)? बस, बाबा कहते हैं– मम्मा का काम था; इसलिए मैंने मँगाया। तुम्हारा उसमें क्या जाता है! यानी मैं कहता हूँ ना– मैंने मँगाया ना उनको। तुमको साक्षात्कार कराता हूँ कि बरोबर देखो बैठी है ना हमारे पास मौज में। इनसे और कुछ मुझे काम कराना है। तुम अपना काम करो ना। तुम अपना बाप से वर्सा लेने का मत्था मारो। वो भी पुरुषार्थी थी। अच्छी पुरुषार्थी थी। पुरुषार्थ करने वाली अच्छी थी। नहीं, हमको और कुछ काम कराना है। तुम क्यों ये चिंतन करते हो इन बातों का? तुमको कहा गया है– मन्मनाभव, मद्याजीभव यानी बाप को याद करो, वर्से को याद करो। बाकी कोई को याद करेंगे तो मुरझा जाएँगे और मुख सूख जाएगा ऐसे, फिलड़ा हो जाएगा एकदम। नहीं, तुमको तो याद कर–करके (...); क्योंकि तुम सौभाग्यशाली हो ना बच्ची। सौभाग्यशाली भी किसका? तुम्हारा वो बाप और वो। वो तो कितना होता है! तुमको तो कभी रोना आना ही नहीं चाहिए बिल्कुल ही। क्यों? तुमको भविष्य 21 जन्म नहीं रोना है। अगर इस समय में रोती रहेंगी, कच्ची पड़ जाएँगी। समझा ना! ज़रूर किसके कारण रोएँगी और जिस कारण रोएँगी, उनके लिए तुमको सज़ा खानी पड़ेगी। रोना बन्द कोई भी हालत में। बाबा कहते हैं आज– अम्मा मरे तब हलुवा खाना, बीबी मरे तब हलुवा खाना। माना? कभी रोने की बात नहीं है, कुछ भी हो जावे; क्योंकि...वर्सा तो बाप से मिलना है ना बच्चे। जबकि हमको, तुमको, जिसको भी चाहिए। इसलिए बच्चे, कुछ भी हो तो बाप की याद में रहना है, वर्सा लेना है और तुम्हारा अंजाम है– मेरा तो एक शिवबाबा, भई दूसरा न कोई। हम उनके बच्चे हैं और बाबा आए हैं लेने के लिए। हम उसके ही धाम में जाएँगे और जो पढ़ाई पढ़ते हैं, उसके एवज में हमको अपना वर्सा नम्बरवार मिल जाएगा। अभी ठीक है ना। इसमें मूँझने (की) तो दरकार नहीं है; क्योंकि ये तो एक ही मधुबन। और तो कोई मधुबन हैं नहीं। और तो सब आर्टीफिशियल मधुबन बने हुए हैं। वहाँ कोई थोड़े ही बैठकर ये राजयोग सिखलाया जाता है, कहाँ भी और प्रैक्टिकल में। वो गीता बैठकर सुनाते हैं, उनमें कोई राजयोग रखा हुआ है जो मिला! भला क्यों जन्म–जन्मांतर पढ़ते आए, राजाई तो किसको मिली नहीं! ऐसा कोई भी गीतापाठी नहीं है जो कहेगा– हम तुमको राजयोग सिखलाते हैं, भविष्य में तुम 21 जन्म राजा बनेंगे। है कोई? कोई भी नहीं। ये तुम जानती हो, निश्चय है कि बरोबर हम पुरुषार्थ ही करते हैं भविष्य 21 जन्म में (...), हूबहू कल्प पहले माफिक और हम कल्प–2 ये 84 जन्म चक्कर लगाकर फिर नए सिर बाप से ये नॉलेज ले करके, फिर हम वरते हैं। ये तो निश्चय हो गया ना बच्ची। तो निश्चय बुद्धि विजयन्ति। विजयन्ति माना रुद्रमाला में पिरोए कर–करके और विष्णु–गले का हार बन जाएँगे। ब्राह्मण की माला बन रही है। कभी देखो दाना 8 नम्बर में, तो कभी ग्रहचारी लगती है तो 50 नम्बर में चला जाता है। (म्युज़िक बजा) तुम्हारे अंदर में डांस होती है। ऐसे–2 खुशी की डांस, हम जा करके अभी वैकुण्ठ में डांस करेंगे। (म्युज़िक बजा)

मीठे–2 सिकीलधे ज्ञान सितारे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट। (बच्चों ने कहा– गुडनाइट) जो भी ब्राह्मण... बगीचे के फूलों प्रति गुडनाइट। (म्युज़िक बजा) और तुम सुनते जाते हो। जब ख्याल होता है कि क्या जमाने के पिछाड़ी चलें या हम बाप के पिछाड़ी चलें? क्योंकि बाप ले ही जाने वाला है। शरीर तो यहाँ खतम हो जाने का विनाश में और बच्चों को ले जाएगा साथ में।